पालि-प्राकृत राष्ट्र

उत्तरविहारट्ठकथायं-थेरमहिन्द

सिद्धार्थ वर्द्धन सिंह

गाथा संग्हो

।।। नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।।।

उत्तरविहारट्ठकथायं-थेरमहिन्द
(गाथा संग्हो)

संग्रहकर्ता एवं अनुवादक

सिद्धार्थ वर्द्धन सिंह

आचार्य (M.A.)
पालि एवं बौद्ध दर्शन
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविधालय
वाराणसी

Donation Rs- 50.00

प्रकाशक: पि०यस० पब्लिकेशन, सारनाथ वाराणसी
E-mail: pragyam563@gmail.com
Mob No: 9473529020

चैत्र शुक्ल पक्ष अष्टमी
2020

ग्रन्थ–परिचय

उत्तरविहारट्ठकथायं थेरमहिन्द द्वारा रचित ग्रन्थ श्रीलंका और बर्मा जैसे देशो में श्रमण व थेरवादी परम्परा में प्रतिपादित ग्रन्थ है। जिसका अभी तक सम्पूर्ण ग्रन्थ पृष्ट अप्राप्त है। यहाँ पर इस ग्रन्थ के कुच्छ अंश बर्मा से पालि रोमन लिपि में प्राप्त अंशो का देवनागरी हिन्दी अनुवाद किया जा रहा है। इसके कुच्छ अंश इसी ग्रन्थ पर लिखे गए महावंस टिका से मिलते जुलते है। इस ग्रन्थ की गाथा संग्रह से प्राचीन भारत के मोरिय(मौर्य) राजवंश पर तथा सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य व सम्राट अशोक के सम्बद्ध में आवश्यक जानकारी प्राप्त होति है। एतिहासिक दृष्टि से भी यह पालि ग्रन्थ महत्वपूर्ण है। महावंस एक प्राचीन पालि ग्रंथ है,जिसका शाब्दिक अर्थ महान वंश का इतिहास है। महावंस ग्रन्थ की रचना महानाम के नामक भिक्षु ने सिंघल द्वीप में किया था। महावंस ग्रन्थ से हमें पता चलता है की यह ग्रन्थ उत्तरविहारट्ठकथायं नामक पालि ग्रन्थ की टिका भाष्य है।
उत्तरविहारट्ठकथायं ग्रन्थ में बहुत से धम्मपदं ग्रन्थ के गाथा का संग्रह सम्राट अशोक के बुद्ध शासन में बुद्धभासित उपदेशो को निग्रोध श्रमण द्वारा उपदेशित प्रसंग में आया है। इस ग्रन्थ से ज्ञात है, ऐसी मोग्गलिपुत्ततिस्स थेर की भविष्यवाणी है कि प्रथम बुद्ध शासन में भारत में बुद्ध के शिक्षा का 2000 वर्षो का अन्धकार व विदेशी परतंत्रता का प्रभाव रहेगा। परन्तु जैसे हि द्वितीय बुद्ध शासन लागु होगा वैसे हि जम्बुद्वीप(भारत) में पुनः बुद्ध की शिक्षा लौट के आएगी। और इस पवित्र भूमि भारत पर कुच्छ एक सौ वर्ष वितते-वितते विदेशी परतंत्रता का प्रभाव इस देश से बाहर चला जायेगा। इस देश में ऐसे पुण्यशाली लोग पैदा होंगे जो बुद्ध की शिक्षा को सहर्ष स्वीकार करेंगे और (शाक्य-मौर्य) **पालि–प्राकृत राष्ट्र** का शासन पुनः लौट के आएगा,जिससे पुरे विश्व में शांति स्थापित होगी।
उत्तरविहारट्ठकथायं का मूलपाठ के साथ हिन्दी (भारतीय) में अनुवादित होकर प्रकाशित होना बहुत आवश्यक था। मैंने इसे सभी प्रकार से उपयोगी बानाने का प्रयास किया है। इस सूत्र को सुन्दर ढंग से प्रकाशित करने के लिए अपने समस्त मित्र-बंधुवो का मै बड़ा हि कृतज्ञ हूँ। मैंने इस कार्य का सम्पादन इसिपत्तन(=सारनाथ) में अपने घर पर रह कर किया है। इन्ही शब्दों के साथ सभी को साधुवाद।

नवापुर, सारनाथ वाराणसी **सिद्धार्थ वर्द्धन सिंह**

01/04/2020

मोरिय नगरे चन्दवड्ढनो खत्तिया राजा नामं रज्ज करोति। मोरिय नगरे नामं पिप्पलियवनिया गामो अहोसि। तेन तस्स नगरस्स सामिनो साकिया च तेसं पुत्त–पुत्ता सकल जम्बूद्वीपे मोरिया नाम ति पाकटा जाता। ततो पभुति तेसं वंसो मोरियवंसो ति वुच्चति, तेन वुत्त मोरियानं खत्तियानं वंसजातं ति।
मौर्य(मोरिय) नगर में चन्द्रवर्द्धन राजा नाम के क्षत्रिय राज्य कर रहे थे। मौर्य नगर में पिप्पलियवन नामक एक गाँव था। तब उस नगर गाँव समीप शाक्यो के पुत्र-पौत्र सकल जम्बुद्वीप में मौर्य (मोरिय) नाम से प्रसिद्ध हुए। तत्पश्चात उनके वंश का नाम मौर्य वंश (मोरिय) पड़ा।

चन्द वड्ढनो राजस्स मोरियरञ्ञो सा अहू।
अग्ग महेसी धम्ममोरिया पुत्ता तस्सासि चन्दगुप्तो'ति॥
मौर्य राजा चन्द्रवर्द्धन की महारानी धम्ममोरिया बनी । उन दोनों से उपन्न पुत्र चन्द्रगुप्त नाम से जगत में विख्यात हुए।

आदिच्चा नाम गोतेन साकिया नाम जातिया।
मोरियानं खात्तियानं वंसजातं सिरिधरं,
चन्दगुप्तो'ति पञ्ञातं विण्हुगुप्तो'ति भातुका ततो॥
आदित्य गोत्र शाक्य जाति(=जन्म) मौर्य वंश के क्षत्रियो में श्रीमान चन्द्रगुप्त राजा हुये तथा उनके भाई विण्हुगुप्त प्रज्ञा सम्पन्न।

एकुनवीसो वयसा पब्बजितो विप्पस्सिनो पाटगु।
अरियमग्गा कोविदं समचरिया समणा विण्हूगुप्तो ति।।
विण्हुगुप्त 19 वर्ष की अवस्था में प्रवाजित हो कर विप्पस्सना में पारंगत अरिय मार्ग के ज्ञाता समता आचरण वाले श्रमण कहलाये।

मोरिय वंसजं चन्दगुप्त नामकुमार अहद्द,
महापवण्या (वेसाखं) मासे कण्हाट्ठमी दिवसे उप्पजित्वा।
तं कुमार दिस्वा पुत्तसिंहने नामगहणं दिवसे,
चन्दो सभेन रक्खिता चन्दगुप्तो'ति नामकत्वा पोसेसि॥
मौर्य वंश के राजकुमार चंद्रगुप्त नाम ग्रहण के दिन वैशाख मास के कृष्ण पक्ष अष्टमी को उत्तपन्न होकर कुमार सिंह पुत्र चन्द्रमा के सामान शोभायेमन थे।

नवमं घनान्द तं घापेत्वा चण्डकोधसा।
सकल जम्बुदिपसमि रज्जे समिभिसिञ्चसो॥
नवे घनानन्द चन्द क्रोधी राजा को मारकर सकल जम्बुद्वीप का चन्द्रगुप्त सम्राट बने।

सो चतुवीस वस्सानि राजा रज्जमकरयि।
तस्स पुत्तो विन्दुसरो अट्ठविसति कारयि॥

उन्होंने 24 वर्षो का राज्य किया तथा उनके पुत्र बिन्दुसार ने 28 वर्षो तक शासन किया।

विन्दुसारस्स पुत्तातु अहेसू दस भातुकता।
असोको आसि तेसं तु पुञ्यतेजबलोरिद्धिको॥

बिन्दुसार के पुत्र परस्पर दस भाई थे। उनमे सबसे महा रिद्धि सम्पन्न राजकुमार अशोक थे।

महापवण्या पुब्बे (चेत्त)मासे सुक्काट्ठमि दिवसे उप्पजित्वा,
यस्सेसो दुल्लभो लोकों पातुभावो अभिण्हसो।
असोको आसि तेसं तु पुञ्यतेजबलोद्धिको॥

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को उत्तपन्न होकर,जिनका संसार में प्रादुर्भाव होना सदा दुर्लभ है,जिनमे अशोक पुण्य,तेज,बल,रिद्धि सम्पन्न है

पत्वा चतुहि वस्सेहि एकरज्जं महायसो।
पुरे पाटलिपुत्तसमि अत्तानमाभिसचयि॥

उस महायशस्वी अशोक ने एकक्षत्रप सामराज्य प्राप्त करने के पश्चात् चार वर्ष बाद पाटलिपुत्र में अपना राज्यारोहण कराया।

काले यातायनगतो सत्त रच्छागतं यति।
नियाग्रोधो सामरेणं सो दिसवा चित्त पसादयि॥

किसी समय अपने खिड़की के पास बैठे सम्राट का चित्त मार्ग में जाते हुए जितेन्द्रिय न्यायग्रोध श्रमण को देख कर अत्यधिक प्रमुदित होते है।

विन्दुसारस्स पुत्तन सब्बेसं जेट्ठभातुनो।
सुमन कुमार पुत्तो सो हि कुमारको॥

यह कुमार श्रामेरण बिन्दुसार के बड़े पुत्र सुमन कुमर के पुत्र थे।

दिस्वा तथा निसिन्नं तं असोको सो महीपति।
सम्भावेत्यान गुणतो तुट्ठोतीय तदा अहू॥

उस सर्वगुण सम्पन्न श्रामेरण को सिंघासन पर बैठे देख सम्राट अशोक अत्यधिक प्रसन्न थे। सद्भावना से भरकर उनको प्रमाण किया।

अन्तनो पाटियतेन खज्जभोज्जेन तप्पिय।
सम्बुद्धभासितं धम्म सामरेणं आपुच्छितं॥

सम्राट अशोक ने अपने लिए बने भोजन का दान श्रामरेण को देकर उनसे बुद्धभासित धर्म के विषय में जिज्ञासा प्रकट की। तब श्रामरेण ने धम्मपदं के वचनों को सुनाया-

मग्गानट्ठङ्गिको सेट्ठो, सच्चानं चतुरो पदा।
विरागो सेट्ठो धम्मानं, द्विपदानञ्च चक्खुमा॥

मार्गों में आष्टांगिक मार्ग श्रेष्ठ है, सच्चाइयों में चार सत्य, धम्मों में वीतरागता श्रेष्ठ है, देवमनुष्यादि द्विपदों में चक्षुमान बुद्ध।

एसो व मग्गो नत्थोञ्ञो,दस्सनस्स विसुद्धिया।
एतं हि तुम्हे पटिपज्जथ, मारस्सेतं पमोहनं॥

दर्शन की विशुद्धि (ज्ञान की प्राप्ति) के लिए यही मार्ग है, कोई दूसरा नही। तुम इसी पर आरुढ़ होतो, यह मार को हक्का-बक्का करने वाला है।

एतं हि तुम्हे पटिपन्ना, दुक्खस्संतं करिस्सथ।
अक्खातो वे मया मग्गो,आञ्ञाय सल्लसन्तनं॥

इस मार्ग पर आरुढ़ होकर तुम दुःख का अंत कर लोगे। मेरे द्वारा शल्य काटने वाले इस मार्ग को स्वयं जान कर तुम्हारे लिए आख्यान किया गया है।

तुम्हेहि किच्चं आतप्पं,अक्खातारो तथागता।
पटिपन्ना पमोक्खन्ति, झायिनो मारबन्धना॥

तपना तो तुम्हे ही पड़ेगा, तथागत तो मार्ग आख्यात करते हैं। इस मार्ग पर आरुढ़ होकर ध्यान करने वाले मार के बंधन से सर्वथा मुक्त हो जाते है।

सब्बेसङ्खारा अनिच्चा ति, यदा पञ्ञाय पस्सति।
अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया॥

सारे संस्कार अनित्य हैं यानि जो कुछ होता है वह नष्ट होता ही है। इस सच्चाई को जब कोई विप्पस्सना-प्रज्ञा से देख-जान लेता है, तब उसको दुःखों से निर्वेद प्राप्त होता है,अर्थात दुःख-क्षेत्र के प्रति भोक्ताभाव टूट जाता है, ऐसा है यह विशुद्धि (विमुक्ति) का मार्ग।

सब्बे सङ्खारा दुक्खाति, यदा पञ्ञाय पस्सति।
अथ निब्बिन्दति दुक्खे,एस मग्गो विसुद्धिया॥

सारे संस्कार दुःख है यानि जो कुछ उत्पन्न होता है,वह नाशवान होने के कारण दुःख ही है। इस सच्चाई को जब कोई विप्पस्सना-प्रज्ञा से देख-जान लेता है,तब उसको सभी दुःखो से निर्वेद प्राप्त होता है। अर्थात दुःख क्षेत्र के प्रति भोक्ताभाव टूट जाता है,ऐसा है यह विशुद्धि (विमुक्ति) का मार्ग।

सब्बे धम्मा अनत्ताति, यदा पञ्ञाय पस्सति।
अथ निब्बिन्दति दुक्खे,एस मग्गो विसुद्धिया॥

सभी धम्म अनित्य हैं यानि लोकीय अथवा लोकोत्तर जो कुछ भी है, वह अनित्य है, 'मैं' 'मेरा' नहीं है। इस सच्चाई को जब कोई विप्पस्सना-प्रज्ञा से देख-जान लेता है,तब उसको सभी दुःखों से निर्वेद प्राप्त होता है, अर्थात, दुःख-क्षेत्र के प्रति भोक्ताभाव टूट जाता है, ऐसा है यह विशुद्धि (विमुक्ति) का मार्ग।

उट्ठानकालम्हि अनुट्ठहानो, युवा बली आलसियं उपेतो।
संसन्नसङ्कप्पमनो कुसीतो,पञ्ञाय मग्गं अलसो न विन्दति॥

जो उद्योग करने के समय उद्योग नहीं करता, युवा और बलशाली होने पर भी आलस्य करता है, मन के संकल्पों को गिरा देता है, निर्वीर्य होता है ऐसा आलसी व्यक्ति प्रज्ञा का मार्ग नहीं पा सकता।

वाचानुरक्खी मनसा सुसंवुतो, कायेनच नाकुसलंकयिरा।
एते तयो कम्मपथे विसोधये, आराधये मग्गमिसिप्पवेदितं॥

वाणी को संयत रखें, मन को संयत रखें और शरीर से कोई अकुशल काम न करे। इन तीनों कर्मपथों का विशोधन करे। ऋषि (बुद्ध) के बताये (अष्टांगिक) मार्ग का अनुसरण करें।

वनं छिन्दथ मा रुक्खं, वनतो जायते भयं।
छेत्वा वनञ्च वनथञ्च,निब्बना होथ भिक्खवो॥

वन (आसक्ति) को काटो, वृक्ष (शरीर) को नही। भय वन से पैदा होता है। साधको! वन को,और झाड़ (तृष्णा) को काटकर अनासक्त हो जाओ।

याव हि वनथो न छिज्जति,अणुमत्तोपि नरस्स नारिसु।
पटिबद्धमनोव नु ताव सो,वच्छो खीरपको व मातरि॥

जब तक अणुमात्र (जरा-सी) भी नर की नारियों के प्रति कामना बनी रहती है, तब तक जैसे दूध पीने वाला बछड़ा माता में आबद्ध रहता है वैसे ही वह नर भी उनमें आसक्त रहता है।

उच्छिंद सिनेहमत्तनो,कुमुदंसारदिकं व पाणिना।
सन्तिमग्गमेव बरूह्य, निब्बानं सुगतेन देसितं॥

जिस प्रकार हाथ से शरद के कुमुद को तोड़ा जाता है, उसी प्रकार अपने हृदय से स्नेह को उच्छिन्न कर डालो, सुगत (बुद्ध) द्वारा उपदिष्ट (इस) शांतिमार्ग निर्वाण को ही भावित करो।

इध वस्सं वसिस्सामि, इध हेमन्तगिम्हिसु।
इति बालो विचिन्तेति, अन्तरायं न बुज्झति॥

मैं यहां वर्षाकाल में रहूंगा, यहाँ हेमंत, ग्रीष्म में मूढ़ व्यक्ति इस प्रकार सोचता है, और किसी संभावित बाधा को नहीं बूझता कि मैं किसी भी समय, देश अथवा उम्र में इस जीवन से कूच कर सकता हूँ।

तं पुत्त पसु सम्मत्तं, व्यासत्त मनसं नरं।
सुत्तं गामं महोघो व,मच्चु आदाय गच्छति॥

जैसे सोये हुए गांव को कोइ भी बड़ी बाढ़ बहा कर ले जाय, वैसे ही पुत्र और पशु के नशे में धुत्त आसक्तचित्त व्यक्ति को मृत्यु पकड़कर ले जाती है।

न सन्ति पुत्ता ताणाय, न पिता नापि बन्धवा।
अन्तके नाधिपन्नस्स,नत्थि ञातिसु ताणता॥

पुत्र रक्षा नहीं कर सकते, न पिता और न ही बंधुजन। जब तक मृत्यु पकड़ लेती है तब जातिबंधु वाले भी रक्षा नहीं कर सकते।

एतमत्थवसं ञत्वा,पण्डितो सीलसंवुतो।
निब्बान गमनं मग्गं, खिप्पमेव विसोधये॥

इस तथ्य को जान कर शील में संयत पंडित (समझदार व्यक्ति) निर्वाण की ओर ले जाने वाले मार्ग का शीघ्र ही विशोधन करे।

तस्स पमादवग्ग सो सामरेणो आभासथ।
त सुत्वा भुमिपालो सो पसन्नो जिनससने॥

उस श्रामरेण ने प्रमाद वर्ग का धर्मोपदेश दिया, जिसको सुनकर सम्राट का हृदय करुणा,प्रसन्नता से भरकर बुद्धशासन में रत हो गया -

मा पमादमनुयुञ्जेथ, मा कामरतिसन्थवं।
अप्पमत्तो हि झायंतो, पप्पोति विपुलं सुखं॥

प्रमाद मत करो और न ही काम-भोगों में लिप्त होओ, क्योंकि अप्रमादी ध्यान करते हुए महान (निर्वाण) सुख को पा लेता है।

पमादं अप्पमादेन, यदा नुदति पण्डितो
पञ्ञापासादमारुय्ह,असोको सोकिनिं पजं।
पब्बतट्ठो व भम्मट्ठो, धीरो बाले अवेक्खति॥

जब कोई समझदार व्यक्ति प्रमाद को अप्रमाद से परे धकेल देता (अर्थात जीत लेता) है, तब वह प्रज्ञारूपी प्रासाद पर चढ़ा हुआ शोक रहित हो जाता है। (ऐसा) शोक रहित धीर (मनुष्य) शोक ग्रस्त (विमूढ़) जनों को ऐसे ही (करुण भाव से) देखता है जैसे कि पर्वत पर खड़ा हुआ (कोई व्यक्ति) धरती पर खड़े हुए लोगों को देखे।

अप्पमत्तो पमत्तेसु, सुत्तेसु बहुजागरो।
अबलस्सं व सीघस्सो,हित्वा याति सुमेधसो॥

प्रमाद करवे वालों में अप्रमादी (क्षीणाश्रव) तथा (अज्ञान की नींद में) सोये लोगों में (प्रज्ञा में) अतिसचेत उत्तम प्रज्ञा वाला(दूसरों को)पीछे छोड़ कर (ऐसे आगे निकल जाता है) जैसे शीघ्रगामी अश्व,दुर्बलअश्व को।

अप्पमादेन मघवा, देवानं सेट्ठतं गतो।
अप्पमादं पसंसन्ति, पमादो गरहितो सदा॥

अप्रमाद के कारण इंद्र देवताओं में श्रेष्ठता को प्राप्त हुआ।(पंडित जन)अप्रमाद की प्रशंसा करते हैं,और प्रमाद की सदा निंदा होती है।

अप्पमादरतो भिक्खु, पमादे भयदस्सि वा।
संयोजनं अणुं थूलं, डहं अग्गीव गच्छति॥

जो भिक्खु (साधक) अप्रमाद में रत रहता है, या प्रमाद में भय देखता है, वह अपने छोटे-बड़े सभी (कर्म-संस्कारों के) बंधनों को आग की भांति जलाते हुए चलता है।

अप्पमादरतो भिक्खु, पमादे भयदस्सि वा।
अभब्बो परिहाणाय, निब्बाणस्सेव सन्तिके॥

जो भिक्खु (साधक) अप्रमाद में रत रहता है, या प्रमाद में भय देखता है, उसका पतन नहीं हो सकता। वह (तो) निर्वाण के समीप (पहुँचा हुआ) होता है।

सहत्था तप्पितो रञ्ञा धम्मदेसियं भूपति।
समणेसु च सिलेसु ठपेसि समहाजनं॥

उनकी त्रिरत्न एवं शील के प्रति श्रद्धा पुष्ट हुई धर्मोपदेश सुनकर सम्राट ध्यानविप्पस्सना में रत होने लगे।

को अरि यदा पञ्ञाय पस्सति।
तेन होति कोअरियं दुक्खा पमुच्चति॥

तब ऐसी अवस्था में सम्राट ने अपने को कोअरिय कहा,जहा उन्होंने अपने अन्दर के शत्रुवो को प्रज्ञा से देख लिया जिससे वह **कोअरिय** अवस्था पर अपने समस्त दुखो से मुक्ति कि ओर अग्रसर हुए।
* इसी का प्राकृत स्वरूप **'कोइरी'** है जो आज का जाति रूप हो गया।

ततो राजा पसन्ने सो द्विगुणन दिने-दिने।
भिक्खु सट्ठी सहस्सानी अनुपुब्बेन बड्ढयि॥

तब सम्राट ने बुद्ध धम्म संघ में दिन प्रति दिन अधिक श्रद्धा होकर वह भोजन दान क्रमश द्विगुणित करते हुए एक दिन में 60 हजार भिक्खुओ को भोजन दान प्रारम्भ करवाया।

सत्थारा देसितो धम्मो कित्तको'ति अपुच्छथ।
व्यकासी मोग्गलिपुत्तो तिस्सथेरो तदास्सतं॥

तत्पश्चात उन्होंने संघ से पूछा भंते बुद्धो द्वारा उपदेशित धर्म-खन्द कितने है? भिक्खु संघ की तरफ से महा थेर मोग्गलिपुत्ततिस्स ने इसका उत्तर दिया।

सुत्वान चतुरासति अरियो धम्मक्खान्दा'ति सोबवि।
पुजेमि तेहं पच्चेक विहारेणा'ति भूपति॥

राजन सुगतो-उपदेसित अरिय धम्म के चौरासी हजार स्कन्द भाग है। भूपति देवता बोले मै एक-एक स्कन्धो पर विहार बनवाकर उसकी ध्यान-विप्पस्सना करूंगा।

दत्वातदा छन्नबूतिधनकोटी महीपति।
पुरेसू चतुरासीतिसहस्सेसू महीतले॥

तब सम्राट ने छ्यांबे करोड़ धन एक साथ देकर संग्रह पृथ्वी तल के चौरासी हजार नगरो में चौरासी हजार विहार निर्माण प्रारम्भ करवाया।

तत्थ तत्थेव राजहि आरभापति।
समयं असोकारामे तु करापेतु समारभि॥

विहार निर्माण के लिए आमात्यो को आदेशित कर स्वयं पाटलिपुत्र में अशोकरामविहार बनवाना प्रारम्भ करवाया।

अथेक दिवसं राजा चतुसम्बुद्धदस्सिनं।
कप्पायुकं महाकालं नागराजं महिद्धकं॥

एक दिन राजा ने सुना की एक कल्पायुवाला रिद्धिसम्पन्न महाकालरूप नागराज ने समय-समय पर चार बुद्धो के दर्शन किये है।

दत्तिसलक्खणुपेतनं असितिव्यञ्जनुज्जलं।
व्यमप्पभापरिक्खीतं केतुमालाभिसोमिति॥
निम्माथि नागराजा सो बुद्धरूपं मनोरमं।
तं दिस्वातिपसादस्स विम्हयस्स च पुरितो॥

तब राजा के आग्रह पर नागराज ने भगवान सम्यकसमबुद्ध का ऐसा मनमोहक एवं नयनाद्कारी रूप चित्रित किया, जो 32 महापुरुस लक्षणों से तथा 80 अनुव्यनजनों से युक्त शोभायमान था। उस दिव्य आभा को देख कर सम्राट अति भावुक हो उठे।

एतेन निम्मित रूपं इदिसं किदिसं नुखो।
तथागतस्स रूपं'ति आसि पितुन्नतुन्नतो॥

और बोले जब इस नाग राज द्वारा बने गया भगवान सम्यकसमबुद्ध का कृतिम चित्र ऐसा सुन्दर है तो स्वयं भगवान बुद्ध कितने सुन्दर रहे होंगे। यो कह कर अशोक भगवान बुद्ध में अधिक से अधिक श्रद्धा रखने लगे।

ततिय सङ्गहे थेरा पेक्खतानागतं हि ते।
ससनोपद्दव तस्स रञ्ञो कलम्हीअद्दसू॥

परन्तु तृतीय संगीति प्रारम्भ होने से पूर्व वर्तमान काल के स्थिविरो ने अपने दिव्यदृष्टि से जान लिया की इस सम्राट के राज्यकाल के शासन के बाद बुद्ध धम्म सघ संकट ग्रस्त होगा।

पेक्खता सकले लोको तदुपददवधतकं।
तिस्सबम्हानद्दक्खु अचिरट्ठायिजीवितं॥

इस संकट को समाप्त करने में पूर्ण समर्थ किसी देवता, मनुष्य को खोजते हुए उन स्थीविरो ने तिष्यबह्मा को समर्थ पाया,जिसका ब्रह्मलोक में ब्रह्मा के रूप में जीवनकाल समाप्त होने वाला था।

ते तं समुपसधम्म आयाचिसू महामति।
मनुस्सेसू पज्जित्वा तदुपददवघातं॥

वे इस महापति के पास गए याचना की आप मनुष्य लोक में उत्तपन्न होकर सद्धधम्म पर आनेवाला इस संकट को निवारण करे।

अदा पटिञ्ञ तेसं सो सासनज्जोतनत्थिको।
सिग्गव चण्डवज्जि च आवाचू दहरेयति॥

उस तिस्सबम्हा ने भी बुद्ध शासन कि उन्नति हित देखरमनुष्य लोक में उत्तपन्न होने का प्रतिवचन दिया तब उन स्थीविरो ने सिग्गव एवं चण्वग्डवज्जि नामक दो तरुण भिक्षुओ से कहा -

अट्ठारसाधिका वस्ससता उपरि हेस्सति।
उपद्दवो सासनस्स न सम्भोस्सामतं मयं॥

आज से 118 वर्ष बाद बुद्धधम्म शासन पर संकट आएगा जिसे देखने के लिए हम उपस्थित नहीं रहेगे।

सासनस्सुज्जोतनत्थायं तिस्स बह्मामहामति।
मोग्गलि घरे पटिसन्धि महेस्सति॥
काले तुह्मेसु एको तं पब्बजेतु कुमारकं।
एको सम्बुद्धवचनं उग्गहापेतु सधुकं॥

बुद्ध शासन कि उन्नति हेतु जब तिष्यबम्हा मोग्गलि घर में जन्म लेंगे तब समय आने पर तुम में कोई एक उस श्रमण को भिक्षु भाव प्रवज्या में लावे तथा दूसरा समग्र बुद्ध वचन भली-भॉती सिखाएगा।

तेरस्स इन्द्गुपत्तस्स कम्माथिट्ठायकस्स।
इद्धिया चासु निट्ठासि असोकरामत्थो॥

उधर पाटलिपुत्र में प्रधान कर्मधिष्ठायक स्थविर इन्द्रगुप्त के रिद्धिबल के प्रभाव से वह अशोकारामविहार भी बन कर तैयार हो गया।

जीनेन परिभुत्तेसू थानेसू च तहि तहि।
चेतियानी अकरेसि रमणीयानि भूपति॥

नगर में जिन महाविहारो का निर्माण कुच्छ दिन समय पहले सम्राट ने प्रारम्भ करवा था वे भी तीन वर्षो के इस अल्प समय में ही पूर्णतः भव्य रूप में निर्मित हो चूका था।

लेखे सुत्वा महाराजा महातेजिविद्धिक्कमो।
कतुकमो सकि येव सब्बाराम महामह॥

इस प्रकार चारो तरफ के चौरासी हजार नगरो से एह ही साथ एह दिन दिन विहार निर्माण पूर्ण होने का समाचार आगया। इन लेखो समाचारों को सुनकर महान यशस्वी तेजस्वी रिद्धिसम्पन्न बलशाली सम्राट बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने एक ही समय में उन सभी महाविहारों का विशेष प्रभावशाली उद्घाटन के आयोजन का निश्चय किया।

दीपमाला-पुप्फमालङ्कारे च तहि तहि।
तुरियेहि च सब्बेहि उपघरं अनेकधा॥
उपोसत्थग्डानादाय सब्बे धम्मं सुनत्त च।
पूजाविसेस्से नेके च करोंत्तु तदहेपि च॥

इस दिन दीपमालाओ तथा पुष्पमालाओ से अपने भवनों को सजाते हुए विविध वध्य यत्रो के साथ नाना प्रकार के उपहारों सहित उपोसथ व्रत रखे। ध्यान-साधना करे तथा इसी पारकर की अन्य पूजाए करे।

सब्बे सब्बत्थ-सब्बत्थ यथाणत्ताधिका।
पूजा सम्पतटियदेसु देवकमनोरमा॥

सम्राट का आदेश सुनकर जनता ने राजाज्ञा से बढ़कर उसमे उत्साह दिखाई दिया। उस ध्यान-विप्पसना महोत्सव के छटा की दिव्यता देवलोक की बराबरी कर रही थी।

अग्गमासि सकारामं भिन्दत्तो वियमेदिनि।
संघपूजयामि अट्ठासि वन्दित्वे संघमुत्तमं॥

अपने नाम से निर्मित अशोकाराम में इतने वैभव वध्य यंत्रो के साथ गए मनो पृथ्वी कम्पित हो उठी। वहा अनुपम संघ की पूजा कर भिक्षु संघ के बिच नम्रता से एक होर खड़े हो गए।

तस्मि समागमे आसु असितिभिक्खुसहस्सति।
अहेसु एकहस्सं तेसु खीणासवा यन्ति॥

उस समारोह में अस्सी हजार तो भिक्षु ही एकत्र हो गए थे । उनमे से एक हजार अर्ह्त्व अवस्था प्राप्त थे।

नापुति सहस्सानि आसु भिक्खुनियो तति।
खीणसवा भिक्खुनियो सहस्स आसु तसुतु॥

नब्बे हजार भिक्षुणिया भी एकत्र हो गई थी। जिसमे एक हजार अर्ह्त्व अवस्था प्राप्त थी।

समुद्दपरियत्तं सो जम्बुद्वीपं समन्तन्तो।
पस्सि सब्बे विहारे च नानापुजविभुसितो॥

महाराजा अशोक ने देखा कि समुद्र तल तक फैले समग्र जम्बुद्वीप में चारो तरफ बने सभी नव-निर्मित विहारों में नाना प्रकार की ध्यान-साधना पूजा हो रही है।

थेरो मोग्गलीपुत्तो सो रञ्ञो पञ्हवियकारी।
धरमाने पि सुगतो नत्थि चागि तया समो॥

मोग्गलिपुत्ततिस्स स्थविर ने राजा से कहा राजन भगवान के समय में भी आप जैसा दानी त्यागी दूसरा नहीं हुआ आज की कोई तुलना ही नहीं, उससे बढ़कर है।

तादिसो पि महाचागि दायादो सासनस्सनं।
पच्चयदायको येव वुच्चते मनुजाधिप॥
सो तु पुत्त धितरं वा पब्बज्जापेसि सासने।
सो सासनस्स दायादो होति ना दायको अपि॥

अपने पुत्र और पुत्री को भी बुद्ध शासन में प्रब्रजित कर दे वाही धम्म का दायाद है। अन्य महा दानी भी दायाद नहीं हो सकता।

पियं पुत्त अहं महिन्द च बुद्धिरूपबालोदितं।
पब्बज्जापेसि सहमं संघमित्त च धितरं॥

यद्यपि भूपति अशोक अपने प्रिय पुत्र मुझे महिन्द को उसाह पूर्वक प्रवार्जित कर दिया साथ में संघमित्रा को भी प्रवज्या दिया गया।

अहं महिन्दो वस्सेहि तिहि दिपप्पसादको।
पीटकन्तय्मुग्गाण्हि उपज्झायस सनितके॥

लंका द्वीप के प्रस्थान से पहले मै महेंद्र अपने उपाध्याय से तीन वर्षो में तीन त्रिपिटको का अध्ययन कंठस्थ कर लिया।

सा भिक्खुनी चन्द लेखा अहं महिन्दो भिखुसुरिय।
सम्बुद्ध सासनस्स ते यदा सोभयं तदा॥

उस समय संघमित्रा भिक्षुणी चन्द्रकला के सामान तथा मै भिक्षुओ में सूर्य के सामान सम्बुद्धशासनरूपी आकाश में प्रकाशित हो रहे थे।

महाकस्सपथेरो च यसथेरो च कारयु।
यथा ते धम्मसङ्गीति तिस्सथेरो पि तं तथा॥

मोग्गलिपुत्ततिस्स के सानिध्य में यह धम्म तृतीय संगीति भी उसी प्रकार से पुर्ण हुई, जिस प्रकार से महास्थविर महाकश्यप की अध्यक्षता में प्रथम संगीति एवं यश स्थविर की अध्यक्षता में द्वितीय संगायन सम्पन्न हुवा था।

कथावत्थु प्पकरणं परवा दप्पमद्दनं।
आभासि तिस्सथेरो चतास्मि संङ्गीतिमंडले॥

इसी संगीति में इन्ही तिस्स द्वारा स्वयं रचित कथावत्थु-प्रकरण जिसमे सभी मातावलम्बियो के मतों का खंडन है सुनाया गया गया।

* ऐसी मोग्गलिपुत्ततिस्स थेर की भविष्यवाणी है कि प्रथम बुद्ध शासन में भारत में बुद्ध के शिक्षा का 2000 वर्षो का अन्धकार व विदेशी परतंत्रता का प्रभाव रहेगा। परन्तु जैसे हि द्वितीय बुद्ध शासन लागु होगा वैसे हि जम्बुद्वीप(भारत) में पुनः बुद्ध की शिक्षा लौट के आएगी। और इस पवित्र भूमि भारत पर कुच्छ एक सौ वर्ष वितते-वितते विदेशी परतंत्रता का प्रभाव इस देश से बाहर चला जायेगा। इस देश में ऐसे पुण्यशाली लोग पैदा होंगे जो बुद्ध की शिक्षा को सहर्ष स्वीकार करेंगे और (शाक्य-मौर्य) पालि-प्राकृत राष्ट्र का शासन पुनः लौट के आएगा जिससे पुरे विश्व में शांति स्थापित होगी।

एवं भिक्खुसस्सेन रक्खायसोकरजिनो।
अयं नवहि मसेहि धम्मसंगीति निट्ठिता॥

इस सम्राट के संरक्षण में एक हजार भिक्षुओ द्वारा नौ माह में यह तृतीय संगीति सम्पन्न हुयी।

रञ्ञो संतरसे वस्से द्वासन्तति समो इति।
महापावरणायं सो संगीति तं समापयि॥

राजा के शासन के सत्रहवे वर्ष में जब मोग्गलितिस्सपुत्त कि आयु बहतर वर्ष कि थी । महापूर्णिमा के दिन यह संगीति सम्पन्न हुयी।

साधुकारं ददन्ति व सासनंद्दिठीकारो।
संगीतिपरियोसाने अकम्पित्थ महामह॥

उस समय संसार में इतना हर्षमय वायुमंडल बन गया था, मानो हमारी पृथ्वी भी संगीति के समाप्त होने पर हर्ष भिभोर होकर साधुवाद देती हुई तथा सद्धम्म की चिरस्थायित्व पर आस्वस्त होकर प्रसन्नता से कम्पित हो उठी।

हित्या से बम्हाविमानं पि मनुजं।
जेगुच्छ सो सस्सान हेतु नरलोकं॥
आग्गमका ससंकिच्च कतकिच्चो।
को नामञो सासन किच्चम्ही पमजो'ति॥

जिसने श्रेष्ठ बम्हालोक को भी तुच्छ समझकर बुद्ध शासन की स्थिरता हेतु भूलोक पर आकर शासन कार्य को निष्पन्न किया और इस कार्य की पूर्ति के बाद स्वयं को कृतज्ञ समझ लिया । तो दूसरा कौन पुरुस चाहेगा की धम्म शासन की रक्षा में प्रमाद किया जाय।

महापवण्या ते छट्ठ मस्सानं अच्चयेन,
धम्मिको राजनो परिनिब्बोतो'ति।
इसिमहापंथ चक्क वतिस्स असोको,
धम्मरञो धम्मराजिक थूपं कारोति॥

महापूर्णिमा के छः माह पश्चात् अर्थात कार्तिक पूर्णिमा को धर्मराज अशोक परिनिवृत्त को प्राप्त हुए। चक्रवर्ती राजा अशोक के शरीर अस्थियो पर ऋराजमार्ग(=इसिपत्तन) में धर्मराजा का धर्मराजिक स्तूप निर्माण कराया गया।

छिंद सोतं परक्कम, कामे पनुद बाह्मण।
सङ्खारानं खयं ञत्वा,अकतञ्ञुसि बाह्मण॥

हे ब्राह्मण,(तृष्णारूपी) स्त्रोत को काट दे,पराक्रम कर कामनाओं को दूर कर। संस्कारों के क्षय को जान कर,हे ब्राह्मण, तू अत निर्वाण का जानने वाला हो जा।

यदा द्वयेसु धम्मेसु, पारगू होति बाह्मणो।
अथस्स सब्बे संयोगो,अत्थं गच्छन्ति जानतो॥

जब कोई ब्राह्मण दो धम्म(शमथ और विप्पस्सना) में पारंगत हो जाता है,तब उस जानकार के सभी बंधन नष्ट हो जाते हैं।

यस्स पारं अपारं वा,पारापारं न विज्जति।
वीतदरं विसञ्ञुत्तं,तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जिसके पार (भीतर के छः आयतन,आंख,कान,नाक,जीभ,काय और मन), अपार (बाहर के छः आयतन रूप,शब्द,गंध,रस,र्स्पस और मन)=पार-अपार (ये दोनों ही,अर्थात 'मैं' 'मेरे' का भाव) नहीं, जो निर्भय और अनासक्त है, वही ब्राह्मण है।

झायिं विरजमासीनं,कतकिच्चं अनासवं।
उत्तमत्थ अनुप्पत्तं, तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जो ध्यानी, विमल, आसनबद्ध(स्थिर),तप और आश्रवरहित हो, जिसने उत्तम अर्थ (निर्वाण) को प्राप्त कर लिया हो, वही ब्राह्मण है।

दिवा तपति आदिच्चो,रत्तिमाभाति चन्दिमा
सन्नद्धो खत्तियो तपति,झायी तपति बाह्मणो।
अथ सब्बमहोरत्तं, बुद्धो तपति तेजसा॥

दिन में सूर्य तपता है,रात में चंद्रमा आभासित है, कवच पहने क्षत्रिय चमकता है,ध्यान करता हुआ ब्राह्मण चमकता है,और सारे रात-दिन बुद्ध अपने तेज से चमकते हैं।

बाहितपापोति बाह्मणो, समचरियो समणोति वुच्चति।
पब्बा जयमत्तनो मलं, तस्मा पब्बजितोतिवुच्चति॥

ब्राह्मण वह कहलाता है जिसने पापों को बहा दिया, श्रमण वह है जिसकी चर्या समतापूर्ण है, और प्रव्रजित वह कहलाता है जिसने अपने चित्त के मैल दूर कर लिये।

न बाह्मणस्स पहरेय्य,नास्स मुञ्चेथ ब्राह्मणो।
धी बाह्मणस्स हन्तारं, ततो धी यस्स मुञ्चति॥

ब्राह्मण(=निष्पाप) पर प्रहार नहीं करना चाहिए और ब्राह्मण को भी उस (प्रहार करने वाले) पर कोप नहीं करना चाहिए। धिक्कार है ब्राह्मण की हत्या करने वाले पर,और उससे भी अधिक धिक्कार है उस पर जो इसके लिए कोप करता है।

न बाह्मणस्सेतकिञ्चि सेय्यो,वदा निसेधो मनसो पियेहि।
यतो यतो हिंसमनो निवत्तति,ततो ततो सम्मतिमेव दुक्खं॥

ब्राह्मण के लिए यह कम श्रेयस्कर नहीं होता जब वह मन से प्रियों को निकाल देता है। जहां-जहां मन हिंसा से टलता है, वहां-वहां दुक्ख शांत होता ही है।

यस्स कायेन वाचाय,मनसा नत्थि दुक्कटं।
संवुतं तीहि ठानेहि,तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जो शरीर से,वाणी से और मन से दुष्कर्म नहीं करता, जो इन तीनों क्षेत्रों में संयमयुक्त है, उसे ही मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

यम्हा धम्मं विजानेय्य, सम्मासम्बुद्धदेसितं।
सक्कच्चं तं नमस्सेय्य,अग्गिहुत्तंव बाह्मणो॥

जिस किसी से सम्यक संबुद्ध द्वारा उपदिष्ट धम्म को जाने, उसे वैसे ही सत्कारपूर्वक नमस्कार करें जैसे अग्निहोत्र को ब्राह्मण (नमस्कार करता है)।

न जटाहि न गोत्तेन, न जच्चा होति बाह्मणो।
यम्हि सच्चञ्च धम्मो च,सो सुची सो च बाह्मणो॥

न जटा से, न गोत्र से, न जन्म से ही ब्राह्मण होता है.जिसमें सत्य (सोलह प्रकार से प्रतिवेधन किये हुए चार आर्य-सत्य) और (नौ प्रकार के लोकोत्तर) धम्म हैं, वही शुचि (पवित्र) है और वही ब्राह्मण है।

किं ते जटाहि दुम्मेध,किं ते अजिनसाटिया।
अब्भन्तरं ते गहनं, बाहिरं परिमज्जसि॥

अरे दुष्प्रभ! जटाओं से तेरा क्या बनेगा? मृगचर्म धारण करने से तेरा क्या लाभ होगा ? भीतर तो तेरा चित्त गहन मलीनता से भरा पड़ा है। बाहर-बाहर से तू इस शरीर को क्या रगड़ता-धोता है?

पंसुकूलधरं जन्तुं, किसं धमनिसन्थतं।
एकं वनस्मिं झायन्तं,तमहं बरूमि बाह्मण॥

जो पशुकुल (फटे चीथड़ों को धारण करता) है, जिसके शरीर की सभी नसें दिखाई पड़ती है, और जो वन में एकाकी ध्यान करने वाला है, वही ब्राह्मण है।

न चाहें बाह्मणं बरूमि, योनिजं मतिसम्भवं
भोवादि नाम सो होति,सचे होति सकिञ्चनो।
अकिञ्चनं अनादानं, तमहं बरूमि बाह्मणं॥

यदि वह परिग्रही (आसक्ति युक्त) है और भो वादी है तो (ब्राह्मणी) माता के गर्भ से उत्पन होने पर भी उसे मैं ब्राह्मण नहीं कहता। जो अपरिग्रही है और अनासक्त है वही ब्राह्मण है।

सब्बसंयोजनं छेत्वा,यो वे न परितस्सति।
सङ्गातिगं विसंयुत्तं,तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जो सारे संयोजनों (बंधनों) को काटकर भय नहीं खाता, जो तृष्णा एवं संयोजन के पार चला गया है, और जिसे संसार में आसक्ति नहीं है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

छेत्वा नद्धिं वरत्तञ्च, सन्दानं सहनुक्कमं।
उक्खित्तपालिघं बुद्धं,तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जो नद्धा (क्रोध), वस्त्र (तृष्णा रूपी रस्सी), संदान (बासठ प्रकार की दृष्टियां रूपी पहगे), और हनक्रम (मुँह पर बाँधे जाने वाले जाल, अनुशय) को काटकर तथा पटिघ (अविद्या रूपी जूए) को उतार फेंक बुद्ध हुआ, वही ब्राह्मण है।

अक्कोसं वधबन्धञ्च,अदुट्ठो यो तितिक्खति।
खन्तीबलं बलानीकं, तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जो चित्त को बिना दूषित किये गाली, वध(दण्ड) और बंधन (कारावास) को सह लेता है, सहन-शक्ति (क्षमा-बल) ही जिसकी सेना है, वही ब्राह्मण है।

अक्कोधनं वतवन्तं, सीलवन्तं अनुस्सदं।
दन्तं अन्तिमसारीरं,तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जो अक्रोधी, (धुत-) व्रती, शीलवान, (तृष्णा के न रहने से) निरभिमानी है, (दंभी नहीं है), (छः इंद्रियों का दमन कर लेने से) दन्त (संयमी) और अंतिम शरीर धारी है, वही ब्राह्मण है।

वारि पोक्खरपत्तेव, आरग्गेरिव सासपो।
यो न लिम्पति कामेसु,तमहं बरूमि बाह्मणं॥

पद्म-पत्र पर जल और सूई के सिरे पर सरसों के दाने के समान जो कामभोगों में लिप्त नहीं होता है, वही ब्राह्मण है।

यो दुक्खस्स पजानाति, इधेव खयमत्तनो।
पन्नाभारं विसंञ्ञुत्तं,तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जो यहीं (इसी लोक में) अपने (खंध) दुःख के क्षय को प्रज्ञापूर्वक जान लेता है, जिसमे अपना बोझ उतार फेंका है, और जो आसक्तिरहित है, वही ब्राह्मण है।

गम्भीरञ्ञं मेधाविं,मग्गामग्गस्स कोविंद।
उत्तमत्थमनुप्पत्तं, तमहं बरूमि बाह्मणं॥

गहन प्रज्ञा वाले, मेधावी, मार्ग-अमार्ग के पंडित, उत्तम अर्थ को प्राप्त हुए (व्यक्ति) वही ब्राह्मण है।

असंसट्ठं गहट्ठेहि, अनागरेहि चूभयं।
अनोकसारि अप्पिच्छं,तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जो गृहस्थों तथा गृह-त्यागियों दोनों में लिप्त नहीं होता, जो बिना ठौर-ठिकाने के घूमने वाला और अल्पेच्छ है, वही ब्राह्मण है।

निधाय दण्डं भूतेसु तसेसु थावरेसु च।
यो न हन्ति न घातेति,तमहं बरूमि बाह्मणं॥

चर व अचर सभी प्राणीयों के प्रति जिसने हिंसा त्याग दिया है, जो न किसी की हत्या करता है, न हत्या करवाता है,वही ब्राह्मण है।

आसा यस्स न विज्जन्ति,अस्मिं लोके परम्हि च।
निरासासं विसंयुत्तं, तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जिसके मन में इस लोक अथवा परलोक के संबंध में कोई आशा-आकंक्षा नहीं रह गयी है, जो सभी प्रकार की आशाओं-आकांक्षाओं और आसक्तियों से मुक्त हो चुका है,उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

यस्सालया न विज्जन्ति,अञ्ञाय अकथंकथी।
अमतोगधं अनुप्पतं, तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जिसको आलय(=तृष्णा) नहीं है,जो सब कुछ जान कर संदेह रहित हो गय है,जिसने डुबकी लगा कर निर्वाण प्राप्त कर लिया है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

योध पुञ्ञञ्च पापञ्च,उभो सङ्गं उपच्चगा।
असोकं विरजं सुद्धं, तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जो यहाँ इस लोक में पुण्य और पाप दोनों के प्रति आसक्ति से परे चला गया है, जो शोक रहित, विमल और शुद्ध है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

चन्दंव विमलं सुद्धं, विप्पसन्नमनाविलं।
नन्दीभवपरिक्खीणं,तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जो चंद्रमा के समान विमल,शुद्ध,निखरा हुआ और मलरहित है और जिसकी भवतृष्णा पूरी तरह क्षीण हो गयी है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

यो इमं पलिपथं दुग्गं, संसारं मोहमच्चगा
तिण्णो पारगतो झायी,अनेजो अकथंकथी।
अनुपादाय निब्बुतो, तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जिसने इस दुर्गम संसार(=जन्म-मरण) के चक्कर में डालने वाले मोह-रूपी उल्टे मार्ग को त्याग दिया है, जो तरा हुआ,पार गया हुआ,ध्यानी,तृष्णारहित होने से स्थिर, संदेहरहित और बिना किसी उपादान के निर्वाणलाभी हो गया है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

योध कामे पहत्वान, अनागारो परिब्बजे।
कामभवपरिक्खीणं,तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जो यहाँ इस लोक में कामभोगों का परित्याग कर, घर-बार छोड़कर प्रव्रजित हो जाये, और जिसका कामभव पूरी तरह क्षीण हो गया हो, वही ब्राह्मण कहता है।

योध तण्हं पहन्तवान, अनागारो परिब्बजे।
तण्हाभवपरिक्खीणं,तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जो यहाँ इस लोक में तृष्णा का परित्याग कर, घर-बार त्याग कर प्रव्रजित हो जाय और जिसकी (भवतृष्णा) पूरी तरफ क्षीण हो गयी हो, वही ब्राह्मण कहता है।

हित्वा मानुसकं योगं,दिब्बं योगं उपच्चगा।
सब्बयोगविसंयुत्तं,तमहं बरूमि बाहमणं॥

जो मानुषिक बंधन और दैवी बंधन से परे चला गया है, जो सब प्रकार के बंधनों से विमुक्त है, वही ब्राह्मण है।

हित्वा रतिञ्च अरतिञच,सीतिभूतं निरुपधिं।
सब्बलोकाभिभुं वीरं, तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जो (पंचकामगुणरूपिणी) रति और (अरण्यवास की उत्कंठास्वरूप) अरति को छोड़कर शांत और क्लेश रहित हो गया है, और जो सारे लोकों को जीतकर वीर (बना) है, वही ब्राह्मण है।

चुतिं यो वेदि सत्तानं,उपपत्तिञ्च सब्बसो।
असत्तं सुगतं बुद्धं, तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जो सत्वो (प्राणियों) की च्युति और उत्पत्ति को पूरी तरह से जानता है, और जो अनासक्त, अच्छी गति वाला और बोधिसंपन है वही ब्राह्मण है।

यस्स गतिं न जानन्ति,देवा गन्धब्बमानुसा।
खीणासवं अरहन्तं, तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जिसकी गति देव, गंघर्व और मनुष्य नहीं जानते और जो क्षीणाश्रव अरहन्त है, वही ब्राह्मण है।

यस्स पुरे च पच्छा च,मज्झे च नत्थि किञ्चनं।
अकिञ्चनं अनादानं, तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जिसके आगे, पीछे और बीच में कुछ नहीं है अर्थात जो अतीत, अनागत, और वर्तमान की सभी कामनाओं से मुक्त है, जो अकिंचन और अपरिग्रही है, वही ब्राह्मण है।

उसभं पवरं वीरं, महेसिं विजिताविनं।
अनेजं नहातकं बुद्धं,तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जो श्रेष्ठ, प्रवर, वीर, महर्षि, विजेता, अकंप्य, स्नातक और बुद्ध है, वही ब्राह्मण है।

पुब्बेनिवासं यो वेदि, सग्गापायञ्च पस्सति,
अथो जातिक्खयं पत्तो,अभिञ्ञावोसितो मुनि।
सब्बवोसितवोसानं, तमहं बरूमि बाह्मणं॥

जो अपने पूर्व-निवास को जानता है, और स्वर्ग तथा नरक को देख लेता है, और फिर जन्म के क्षय को प्राप्त हुआ अपनी अभिज्ञाओं को पूर्ण किया हुआ मुनि है और जिसने जो कुछ करना था वह सब कर लिया है, वही ब्राह्मण है।

न ही वेरेन वेरानि, सम्मन्तीध कुदाचनं।
अवेरेन च सम्मन्ति,एस धम्मो सनन्तनो॥

वैर से वैर शांत नहीं होते, बल्कि अवैर से शांत होते हैं। यही सनातन धर्म हैं।

अनिक्क सावो कासावं,यो वत्थं परिदहिस्सति।
अपेतो दमसच्चेन, न सो कासावमरहति॥

जिसने कषायों (चित्तमलों) का परित्याग नहीं किया है पर कषाय वस्त्र धारण किये हुए है, वह संयम और सत्य से परे है.वह कषाय वस्त्र (धारण करने) का अधिकारी नहीं है।

यो च वन्तक सावस्स,सीलेसु सुसमाहितो।
उपेतो दमसच्चेन, स वे कासावमरहति॥

जिसने कषायों (चित्तमलों) को निकाल बाहर किया हैं, शीलों में प्रतिष्ठित है, संयम और सत्य से युक्त है, वह निरूसंदेह काषाय वस्त्र (धारन करने) का अधिकारी हैं।

यथा अगारं सुछन्नं, वुट्ठी न समतिविज्झति।
एवं सुभावितं चित्तं,रागो न समतिविज्झति॥

जैसे अच्छी तरह ढके हुए घर में वर्षा का पानी नहीं घुस पाता है, वैसे ही (शमथ और विप्पस्सना से) अच्छी तरह भावित चित्त में राग नहीं घुस पाता है।

अप्पम्पि च संहितं भासमानो,धम्मस्स होति अनुधम्मचारी
रागञ्च दोसञ्च पहाय मोहं, सम्मप्पजानो सुविमुत्तचित्तो।
अनुपादियानो इध वा हुरं वा, स भागवा सामञ्स्स होति॥

धम्मग्रंथों का भले थोड़ा ही पाठ करें, लेकिन यदि वह (व्यक्ति) धम्म के अनुकूल आचरण करने वाला होता है, तो राग, द्वेष और मोह को त्यागकर, संप्रज्ञानी बन, भली प्रकार विमुक्त चित्त होकर, इहलोक अथवा परलोक में कुछ भी आसक्ति न करता हुआ श्रमणत्व का भागी हो जाता है।

बहुं वे सरणं यन्ति, पब्बतानि वनानि च।
आरामरुक्खचेत्यानि,मनुस्सा भयतज्जिता॥

मनुष्य भय के मारे पर्वतों, वनों, उद्यानों, वृक्षों, चौत्यों आदि बहुतों की शरण में जाते हैं।

नेतं खो सरणं खेमं, नेतं सरणमुत्तमं।
नेतं सरणमागम्म,सब्बदुक्खा पमुच्चति॥

(परंतु) यह शरण मंगलकारी नहीं है, यह शरण उत्तम नहीं है, इस शरणों को पाकर सभी दुःखों से छुटकारा नहीं होता।

यो च बुद्धञ्च धम्मञ्च, सङ्घस्स सरणं गतो
चत्तारि अरियसच्चानि,सम्मप्पञ्ञाय पस्सति।
दुक्खं दुक्खसमुप्पादं, दुक्खस्स च अतिक्कमं
अरियं अट्ठङ्गिकं मग्गं, दुक्खपसमगामिनं॥
एतं खो सरणं खेमं, एतं सरणमुत्तमं
एतं सरणमागम्म,सब्बदुक्खा पमुच्चति॥

जो बुद्ध,धम्म और संघ की शरण गया, जो चार श्रेष्ठ सत्यों दुक्ख, दुक्ख की उत्पत्ति, दुक्ख से मुक्ति और मुक्तिगामी श्रेष्ठ अष्टांगिक मार्ग को सम्यक प्रज्ञा से देखता है,यही मंगलदायक शरण है,यही उत्तम शरण है,इसी शरण को प्राप्त कर व्यक्ति सभी दुक्खों से मुक्त होता है।